RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

Where dream Chisels into reality

YOUNGSTER · ESTABLISHED 2004 · NEW DELHI · FEB 2019 · PAGES 8 · PRICE 1/- · MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

Tecnia Sports Meet 2019

Prize Distribution Ceremony During Tecnia Sports Meet -2019

Tecnia Group of Institutions has organized its third edition of "Tecnia Sports Meet 2019" from 28 January 2019 to 1st February 2019 at DDA Sports Complex, Rohini, New Delhi to promote sporting spirit among Divyang Students (Specially enabled students) and "Inclusive India campaign" of Govt. of India. In the "Sports Meet 2019" various sports such as Cricket, Carom, Chess, Football, Tug of War, Volleyball, Table Tennis, 100 meters, 200 meters 400 meters race, Relay race etc. were held in which all the students of Tecnia Group took part with great enthusiasm. The opening ceremony of the sports meet took place with colorful cultural presentation and torch march past. Dr. Ram Kailash Gupta (Chairman, Tecnia Group of Institutions) said that this sports meet is an attempt to facilitate the realization of equal opportunities, protection of human rights and full participation of Divyang Students (Students with intellectual and developmental disabilities) into the mainstream of Society. He further added that Inclusive India Initiative is born out of the very need of creating awareness among public towards sporting spirit in them and also make Divyang Students and people Part and Parcel of their day to day lives. Dr. Ajay Kumar (Director, Tecnia Institute of Advanced Studies) told that Tecnia Sports Meet 2019 is a platform where the students of all age groups can develop and enhance skills like strength, speed, endurance, agility, flexibility, control, and balance through sports. Dr. AK Srivastava, Chief Executive (Education and Development) of the institute greeted the participants and said that sports plays a healthy role in the human body, as well as gives the student an opportunity to demonstrate their talent in sports. On this occasion Dr. Anmol Arora, director of Ashtvakra Institute, teacher and students were present.

-Rahul Mittal

Anugoonj-2019

Tecnia Institute of Advanced Studies grabbed 2 golds in the final of Anugoonj 2019 being organized by Guru Gobind Singh Indraparastha University, Dwarka from 7th Feb 2019 to 9th Feb 2019 in the events Poetry (Hindi) and Debate (Hindi). Ankita Garg and Vaishnavi Sharma in Debate (Hindi) and Ankita Garg in Poetry (Hindi) students of BA(JMC) has won first prize in Anugoonj 2019.

Ankita Garg Receiving Awards In Anugoonj-2019 GGSIP University

-Rahul Mittal

"ABHINAY" -THEATRE WORKSHOP ORGANIZED

Abhinay- Theatre Workshop" was organized by Cultural Club along with Mridang Theatre Society of **Tecnia Institute Of Advanced Studies** in collaboration with Weird Theatre & Films on 6th February, 2019 in Ravishankar Hall, TIAS. Later, they first enacted and then gave various exercises where students could display their art of acting. 35 students participated in the workshop and learnt different aspects of acting, Navras, basic Knowledge of stage, characterization or character building, memory games/exercises and improvisation. Mr. Mohit Gupta and his team members told the students about the fine skills required for acting. They gave deliberations on how to memorize the scripts, the various facial expressions to be displayed, the voice modulations, the gestures and shipping into the characters while performing on stage.

Mr. Mohit is explaining about a scene.

Every participant is standing in a group and listening to Mr. Mohit for group activity.

-य-ब

परिवार के साथ अच्छा वक्त बिताने के लिए दिल्ली-NCR की सबसे बेहतरीन जगहें

ऐसा कई बार होता है कि हम अपने वीकेंड पर सोचते हैं कि चलो, परिवार या दोस्तों के साथ कहीं बाहर घूमने– फिरने जाया जाए लेकिन जैसे ही दिल्ली के ट्रैफिक की याद आती है मन पीछे हट जाता है ऐसा लगता है कि दिल्ली में कुछ है ही नहीं घूमने के लिए और कुछ है भी तो वहां जाते–जाते शाम हो जाएगी बस फिर क्या प्लान कैंसिल हो जाता हैं लेकिन आज हम आपको घूमने– फिरने की ऐसी लोकेशन के बारे में बताएंगे जहां जाकर आपका मन खुश हो जाएगा। ये लोकेशन एकदम दिल्ली के पास ही हैं जिसके लिए आपको किसी भी तरह की परेशानी नहीं झेलनी पड़ेगी, इन जगहों पर जाकर आप Good Time अपने परिवार या दोस्तों के साथ स्पेंड़ कर सकते हैं।

मानेसर

दिल्ली के केवल 45 किलोमीटर दूर मानेसर घूमने–फिरने वालों के लिए काफी अच्छी जगह हैं जहां आप अपने परिवार के साथ जा सकते हैं पिकनिक मनाने। यहां आपको राजस्थानी कल्चर देखने को मिलेगी। खाने के लिए भी खूब सारी वेराइटी हैं जिसमें से राजस्थानी खाना यहां की विशेषता है। इसके अलावा आप कई तरह के पक्षियों और म्यूजियम को देख सकते हैं।

तरुधन वैली गोल्फ रिसॉर्ट

अरावली की पहाड़ियों के बीच दिल्ली के बाहर, मानेसर से 20 किलोमीटर दूर, एक अंतरराष्ट्रीय मानक गोल्फ कोर्स से सटा एक सुंदर घूमने के लिए स्थान है तरुधन वैली गोल्फ रिसॉर्ट। ये जगह एक दिन परिवार के साथ घूमने के लिए एकदम परफेक्ट है। यहां आकर आप गोल्फ खेलें, स्पा और स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद लें।

कैंप वाइल्ड धौज

धौज झील फरीदाबाद से 20 किमी की दूरी पर है। झील बहुत ही सुन्दर है और हरे–भरे पेड़ों से घिरी है। यह एक लोकप्रिय पिकनिक स्पॉट है। लोग यहाँ कैम्प के लिये भी आते हैं। यहां आपको कैंपिंग से लेकर रॉक क्लाइम्बिं, फ्लाइंग फॉक्स और रिवर क्रॉसिंग आदि चीजें मिलेंगी। इस एरिया के आसपास गांव भी हैं तो यहां जाकर ताजगी और सुकून का एहसास भी होगा।

वी रिजॉर्ट फार्म स्टे दिल्ली

वी रिसॉर्ट्स फार्म स्टे दिल्ली में स्थित हैं ये छतरपुर मेट्रो स्टेशन से सिर्फ 9 किमी दूर है। शोर, व्यस्त शहरी जीवन से अगर आप थक गये हैं कुछ सूकून की तलाश में हैं तो आप यहां आ सकते हैं एक दिन दिल्ली में परिवार के साथ बिताने के लिए बेस्ट हैं। इसके रचनात्मक रूप से परिदृश्य वाले बगीचे, फलों के बाग, छिपे हुए रास्ते और जल निकाय आपको शहर के जीवन के किसी भी भाग के साथ एक हरे रंग की छुट्टी पर ले जाते हैं।

-य-ब

Students During Awards Ceremony

Students During Awards Ceremony

Students playing badminton

Students During March Past

Students Playing Table Tennis

Students Playing Cricket

इस तरह अस्थमा की समस्या को जड़ से खत्म करते हैं यह घरेलू उपचार

सांस लिए बिना व्यक्ति दो मिनट तक भी नहीं रह सकता, लेकिन फिर भी लोग इसे बेहद सामान्य मानते हैं। आप भले ही सांसों का मोल न समझते हों लेकिन इसकी वास्तविक कीमत एक अस्थमा पीडित व्यक्ति ही समझ सकता है। श्वसन संबंधी यह समस्या कभी–कभी जानलेवा भी साबित होती है। यूं तो आप इसके लिए दवाई का सेवन करते होंगे लेकिन कुछ प्राकृतिक उपचार करने से अस्थमा अटैक को काफी हद तक कम किया जा सकता है। तो चलिए जानते हैं ऐसे ही कुछ उपायों के बारे में

लैवेंडर ऑयल

पांच छह बूंदे लैवेंडर ऑयल की एक बाउल गर्म पानी में डालें और उससे करीबन पांच से दस मिनट तक स्टीम लें। आप इस उपाय को प्रतिदिन करें। लैवेंडर का तेल न सिर्फ वायुमार्ग की सूजन को कम करता है, बल्कि बलगम के उत्पादन को भी नियंत्रित करता है। जिससे आपके वायुमार्ग को आराम मिलता है और साथ ही साथ प्रतिरक्षा तंत्र भी मजबूत होता है। इस प्रकार लैवेंडर ऑयल की मदद से अस्थमा अटैक को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है।

शहद

श्वास संबंधी समस्याओं को दूर करने में शहद सबसे पुराना और प्राकृतिक उपचार है। इसके लिए एक गिलास गर्म पानी लेकर उसमें एक चम्मच शहद मिलाकर उसका धीरे–धीरे सेवन करें। इसके अतिरिक्त रात में सोने से पहले भी एक चम्मच शहद में थोड़ा सा दालचीनी पाउडर मिलाकर उसे चाट लें। आप शहद व पानी का सेवन दिन में तीन बार कर सकते हैं। शहद गले से कफ हटाने के मदद करता है।

हल्दी

एक गिलास पानी में एक चौथाई चम्मच हल्दी मिलाकर उसका सेवन करें। करीबन पंद्रह दिनों तक इस उपचार को दिन में तीन बार करें। हल्दी एक बेहतरीन एंटीमाइक्रोबॉयल एजेंट है। साथ ही इसमें कर्क्युमिन भी पाया जाता है, जो अस्थमा से लड़ने में मददगार है।

कॉफी

आपको शायद जानकर हैरानी हो लेकिन कॉफी भी अस्थमा से राहत दिलाने का एक आसान लेकिन कारगर उपाय है। इसके लिए आप एक कप गर्मागर्म कॉफी का सेवन करें। इससे आपको तुरंत अस्थमा से राहत मिलती है। दरअसल, यह तुरंत वायुमार्ग को खोलता है, जिससे आपको सांस लेने में आसानी होती है।

अदरक

अदरक का इस्तेमाल आपने चाय में तो कई बार किया होगा, अब इसकी मदद से अस्थमा को मात दें। इसके लिए अदरक को कद्दूकस करके उसे एक कप गर्म पानी में डाल दें। अब इसे पांच मिनट के लिए यूं ही छोड़ दें। अब पानी को छान लें और इसमें शहद मिक्स करके गर्म ही पीएं।

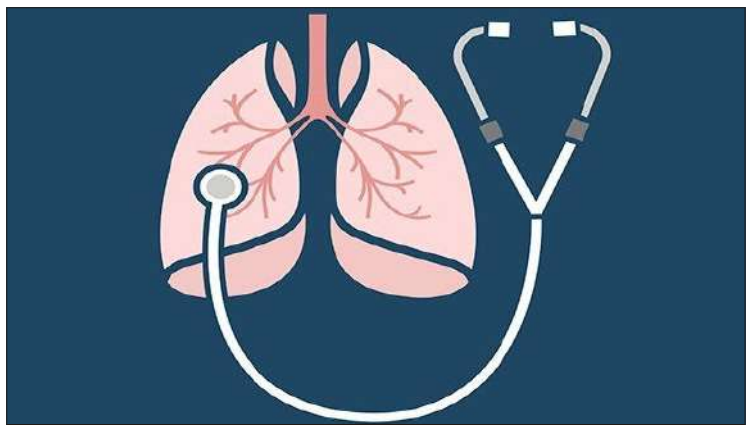

THIS MONTH

February 11, 2011 - In Egypt, President Hosni Mubarak resigned amid a massive protest calling for his ouster. Thousands of young Egyptians and others had protested non-stop for 18 days in Cairo, Alexandria and elsewhere. Mubarak had ruled Egypt for nearly 30 years, functioning as a virtual dictator.

•••

February 23, 1991 - In Desert Storm, the Allied ground offensive began after a devastating month-long air campaign targeting Iraqi troops in both Iraq and Kuwait.

•••

February 28, 1994 - NATO conducted its first combat action in its 45 year history as four Bosnian Serb jets were shot down by American fighters in a no-fly zone.

•••

February 26, 1994 - Political foes of Russian President Boris Yeltsin were freed by a general amnesty granted by the new Russian Parliament.

•••

February 27, 1991 - In Desert Storm, the 100-hour ground war ended as Allied troops entered Kuwait just four days after launching their offensive against Saddam Hussein's Iraqi forces.

Compilation:
Honey Shah

BASICS OF MEDIA

Balanced Line: A pair of ungrounded conductors whose voltages are opposite in polarity but equal in magnitude.

•••

Bias Current: An extremely high frequency AC current, far beyond audibility, added during a tape recording to linearize the magnetic information.

•••

Calibration: Adjusting equipment components for example, a console and a tape recorder according to a standard so that their measurements are similar.

•••

Capacitor Microphone: A microphone that transduces acoustic energy into electric energy electrostatically.

•••

Wipe: Transition in which a second image, framed in some geometric shape, gradually replaces all or part of the first image.

•••

Aliasing: The step like appearance of a computer-generated diagonal or curved line. Also called jaggies or stair steps.

•••

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Rahul Mittal

हिंदीभाषियों की पीड़ा यूएई ने तो समझ ली, भारतीय अदालतें कब समझेंगी ?

संयुक्त अरब अमीरात यानि दुबई और अबूधाबी ने ऐतिहासिक फैसला लेते हुए अरबी और अंग्रेजी के बाद हिंदी को अपनी अदालतों में तीसरी आधिकारिक भाषा के रूप में शामिल कर लिया है। इसका मकसद हिंदी भाषी लोगों को मुकदमे की प्रक्रिया, उनके अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में सीखने में मदद करना है। न्याय तक पहुंच बढ़ाने के लिहाज से यह कदम उठाया गया है। अमीरात की जनसंख्या 90 लाख है। उसमें 26 लाख भारतीय हैं, इन भारतीयों में कई पढ़े–लिखे और धनाढ्य लोग भी हैं लेकिन ज्यादातर मजदूर और कम पढ़े–लिखे लोग हैं। इन लोगों के लिए अरबी और अंग्रेजी के सहारे न्याय पाना बड़ा मुश्किल होता है। इन्हें पता ही नहीं चलता कि अदालत में वकील क्या बहस कर रहे हैं और जजों ने जो फैसला दिया है, उसके तथ्य और तर्क क्या हैं ? ज्वलंत प्रश्न है कि विदेशों में बसे भारतीयों की इस तकलीफ का ध्यान रखने का निर्णय लिया गया है तो भारत में ऐसे निर्णय क्यों नहीं लिये जाते ? प्रश्न यह भी है कि विदेशों में ही क्यों बढ़ रही है हिन्दी की ताकत ? झकझोरने वाला प्रश्न यह भी है कि राष्ट्र भाषा हिन्दी को आजादी के 72 वर्ष बीत जाने पर भी अपने ही देश में क्यों घोर उपेक्षा का सामना करना पड़ रहा है? हिन्दी की उपेक्षा राष्ट्रीय शर्म का विषय है, जबकि विश्व में हिन्दी की ताकत बढ़ रही है। भारत सरकार के प्रयत्नों से हिन्दी को विश्वस्तर पर प्रतिष्ठापित किया जा रहा है, यह सराहनीय बात है। लेकिन भारत में उसकी उपेक्षा कब तक होती रहेगी, यह प्रश्न भी सरकार के लिये सोचनीय होना चाहिए। हिन्दी को कानून की भाषा बनाने का जो काम भारत में सबसे पहले होना चाहिए था, वह काम संयुक्त अरब अमारात कर रहा है, इसके लिये अबू धाबी के शेख मंसूर अल नाह्यान बधाई के पात्र हैं, उनके इस निर्णय का स्वागत ही नहीं करना चाहिए, उससे कुछ सीख भी लेनी चाहिए। भारत की अदालतों में आजादी के 70 साल बाद भी भारतीय भाषाओं का इस्तेमाल नहीं होता। सर्वोच्च न्यायालय तो अभी भी अंग्रेजी में ही सारे काम–काज के लिये अड़ा हुआ है। वहां मुकदमों की बहस अंग्रेजी में ही होती है। जहां बहस 'अंग्रेजी' में होती है, वहां फैसले भी अंग्रेजी में ही आते हैं। अभी सुना है कि उनके हिंदी अनुवाद की बात चल रही है। बात केवल कानून के सर्वोच्च संस्थान की ही नहीं है, बल्कि समस्त सरकारी कामकाज भी अंग्रेजी में ही होता है, उच्च शिक्षा भी अंग्रेजी में ही दी जा रही है, यहां तक प्राथमिक–माध्यमिक शिक्षा में भी अंग्रेजी का ही बोलबाला है, कैसे हम अपनी भाषा को प्राथमिकता देंगे ? कब भारत के भाग्य निर्माता हिन्दी को जनभाषा, राजकाज की भाषा एवं कानून की भाषा का दर्जा देकर बधाई के पात्र बनेंगे ? भारत एक है, संविधान एक है। लोकसभा एक है। सेना एक है। मुद्रा एक है। राष्ट्रीय ध्वज एक है। लेकिन इन सबके अतिरिक्त बहुत कुछ और है जो भी एक होना चाहिए। बात चाहे राष्ट्र भाषा की हो या राष्ट्र गान या राष्ट्र गीत– इन सबको भी समूचे राष्ट्र में सम्मान एवं स्वीकार्यता मिलनी चाहिए। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और उनकी सरकार को चाहिए कि वह ऐसे आदेश जारी करे जिससे सरकार के सारे अंदरुनी काम–काज भी हिन्दी में होने लगे और अंग्रेजी से मुक्ति की दिशा सुनिश्चित हो जाये। अगर ऐसा होता है तो यह राष्ट्रीयता को सुदृढ़ करने की दिशा में एक अनुकरणीय एवं सराहनीय पहल होगी। ऐसा होने से महात्मा गांधी, गुरु गोलवलकर और डॉ. राममनोहर लोहिया का सपना साकार हो सकेगा। देश की जनता भी हिन्दी को उचित सम्मान दें एवं उसे अपने जीवन में प्रतिष्ठापित करें। भारतीय जनता की दुर्बलता एवं सबसे बड़ी कमजोरी रही है कि हिन्दी को उसका उचित स्थान और सम्मान नहीं मिल पाया है। नेता हो या जनता– हिन्दी की यह दुर्दशा एवं उपेक्षा सोचनीय है। अत्यन्त सोचनीय है। खतरे की स्थिति तक सोचनीय है कि आज का तथाकथित नेतृत्व दोहरे चरित्र वाला, दोहरे मापदण्ड वाला बना हुआ है। उसने कई मुखौटे एकत्रित कर रखे हैं और अपनी सुविधा के मुताबिक बदल लेता है, यह भयानक स्थिति है। इसी कारण हिन्दी को आज भी दोयम दर्जा हासिल है।

विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के प्रयासों से विदेशों में हिन्दी की प्रतिष्ठा बढ़ रही है, एक नया विश्वास जगा है कि वैश्विक स्तर पर हिंदी को मान्यता दिलाने के सरकार के प्रयास सफल होते दिखाई पड़ रहे हैं। विश्व हिन्दी सम्मेलन 1975 से लेकर भोपाल में आयोजित 2018 के सम्मेलन तक बार–बार यह प्रश्न खड़ा होता रहा है कि संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी कब अधिकारिक भाषा बनेगी ? हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी राष्ट्र एवं राज भाषा हिन्दी

का सम्मान बढ़ाने एवं उसके अस्तित्व एवं अस्मिता को नयी ऊंचाई देने के लिये अनूठे उपक्रम किये हैं। हिन्दी को उसका गौरवपूर्ण स्थान दिलाने के लिये नरेन्द्र मोदी एवं पूर्व प्रधानमंत्री अटल विहारी वाजपेयी के प्रयत्नों को राष्ट्र सदा स्मरणीय रखेगा। क्योंकि मोदी ने सितंबर 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में भाषण देकर न केवल हिन्दी को गौरवान्वित किया बल्कि देश के हर नागरिक का सीना चौड़ा किया। सबसे पहले 1977 में हिंदी में भाषण दिया था अटल बिहारी बाजपेयी ने। उस वक्त वे जनता पार्टी सरकार में विदेश मंत्री थे और यूएन में भारत की अगुवाई कर रहे थे। संयुक्त राष्ट्र में किसी भी भारतीय के पहले हिंदी भाषण का पूरे देश में जोरदार स्वागत हुआ था। उनके भाषण की जगह–जगह चर्चा होती थी। इसके बाद उन्होंने सन 2002 में भारत के प्रधानमंत्री के रूप में दोबारा इस अंतरराष्ट्रीय मंच से हिंदी में अपनी बात रखी थी। लेकिन प्रश्न यह है कि दोनों ही सक्षम नेताओं ने हिन्दी को अपने ही देश में क्यों उपेक्षित रहने दिया। क्या कारण है कि आजादी के 70 साल बाद भी सरकारें अपना काम–काज अंग्रेजी में करती हैं, यह देश के लिये दुर्भाग्यपूर्ण एवं विडम्बनापूर्ण स्थिति है।

सच्चाई तो यह है कि देश में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को जो सम्मान मिलना चाहिए, वह स्थान एवं सम्मान अंग्रेजी को मिल रहा है। अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं की सहायता जरूर ली जाए लेकिन तकनीकी एवं कानून की पढ़ाई के माध्यम के तौर पर अंग्रेजी को प्रतिबंधित किया जाना चाहिए। क्योंकि इससे राष्ट्रीयता कमजोर होती है। राष्ट्रीयता एवं राष्ट्रीय प्रतीकों की उपेक्षा एक ऐसा प्रदूषण है, एक ऐसा अंधेरा है जिससे ठीक उसी प्रकार लड़ना होगा जैसे एक नन्हा–सा दीपक गहन अंधेरे से लड़ता है। छोटी औकात, पर अंधेरे को पास नहीं आने देता। राष्ट्र–भाषा को लेकर छाए धूंध को मिटाने के लिये कुछ ऐसे ही ठोस कदम उठाने ही होंगे। विकास की उपलब्धियों से हम ताकतवर बन सकते हैं, महान् नहीं। महान् उस दिन बनेंगे जिस दिन हिन्दी को उचित स्थान एवं सम्मान देंगे।

कितने दुख की बात है कि आजादी के 72 साल बाद भी हमारे दूर–दराज के जिलों में राज्य सरकारें अपना काम–काज अंग्रेजी में करती हैं। हिन्दी विश्व की एक प्राचीन, समृद्ध तथा महान भाषा होने के साथ ही हमारी राजभाषा भी है, यह हमारे अस्तित्व एवं अस्मिता की भी प्रतीक है, यह हमारी राष्ट्रीयता एवं संस्कृति की भी प्रतीक है। भारत की स्वतंत्रता के बाद 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी। इस महत्वपूर्ण निर्णय के बाद ही हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रचारित–प्रसारित करने के लिए 1953 से सम्पूर्ण भारत में 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिन्दी–दिवस के रूप में मनाया जाता है। राजभाषा बनने के बाद हिन्दी ने विभिन्न राज्यों के कामकाज में आपसी लोगों से सम्पर्क स्थापित करने का अभिनव कार्य किया है। लेकिन अंग्रेजी के वर्चस्व के कारण आज भी हिन्दी भाषा को वह स्थान प्राप्त नहीं है, जो होना चाहिए।

चीनी भाषा के बाद हिन्दी विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा है। भारत और अन्य देशों में 70 करोड़ से अधिक लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। पाकिस्तान की तो अधिकांश आबादी हिंदी बोलती व समझती है। बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, तिब्बत, म्यांमार, अफगानिस्तान में भी लाखों लोग हिंदी बोलते और समझते हैं। फिजी, सुरिनाम, गुयाना, त्रिनिदाद जैसे देश तो हिंदी भाषियों द्वारा ही बसाए गये हैं। हिन्दी का हर दृष्टि से इतना महत्व होते हुए भी भारत में प्रत्येक स्तर पर इसकी इतनी उपेक्षा क्यों ? शेक्सपीयर ने कहा था– 'दुर्बलता! तेरा नाम स्त्री है।' पर आज शेक्सपीयर होता तो आम भारतीय एवं सरकारों के द्वारा हो रही हिन्दी की उपेक्षा के परिप्रेक्ष्य में कहता– 'दुर्बलता! तेरा नाम भारतीय जनता एवं शासन व्यवस्था है।' क्योंकि दुनिया में हिन्दी का वर्चस्व बढ़ रहा है, लेकिन हमारे देश में ऐसा नहीं होना, इन्हीं विरोधाभासी एवं विडम्बनापूर्ण परिस्थितियों को ही दर्शाता है।

Budget Session-2019

Faculty coordinator interacting with the students

Students during Budget Session

National Service Scheme

Certificate Distribution during workshop

Certificate Distribution during workshop

रिश्तें...

''रिश्ता''

सभी से होता है , मगर

कोई प्यार से निभाता है.....

तो कोई नफरत से निभता है....

.

''जिंदगी''

सभी जीते है , मगर.....

कोई सबकुछ आने के

बाद भी दुखी रहता है, तो

कोई लुटाने के बाद भी खुश

रहता है .....

''दोस्ती''

सभी करते है मगर.....

कुछ लोग निभाते है.....

तो कुछ लोग आजमाते है .....

''हमसफर''

सभी है मगर

-प्रिया

35th National Conference on "McKinsey 7sModel"

Dignitaries Releasing Conference Proceeding

Felicitation of Chief Guest By Dr. Ajay Kumar Rathore ,Director Tias

Chief Guest During Lamp Lighting Ceremony

Dr. Ajay Kumar Rathore ,Director TIAS Felicitating the Guest of Honour

Group Photograph During National Conference

Sustainable business models and propositions require a deep understanding of value chain dynamics as well as customer needs and behavior. Furthermore, companies need to keep a breast of developments in technology, design, and infrastructure which are creating the space for new solutions to emerge said by Prof. J.L Gupta (Former. Vice-Chancellor of GGU Bilaspur, University) as a chief guest on the occasion of 35th one day National Conference on "McKinsey Model: Innovation, Growth, Sustainability and Scalability of Business on 2nd Feb, 2019 at Tecnia Institute of Advanced Studies, Rohini, Delhi. The conference began with lighting of the lamp by guest and dignitaries. On this occasion Dr. Ram Kailash Gupta (Chairman, Tecnia Group), Dr. Ajay Kumar (Director, Tecnia Institute of Advanced Studies), Dr. A.K Srivastava, (CEO, A & D) Tecnia Institute of Advanced Studies, Prof.(Dr). Prof. JL Gupta (Former Vice Chancellor, GGU, Bilaspur University), Dr. V.K. Gupta (Joint Director General Ministry of Defense, Government of India), Prof. P. V Khatri (Principal, Swami Shraddhanand College, Delhi University), Prof. S. S. Handa (Indian Statistical Institute, Delhi), Prof. Rajesh Bajaj and Dr. Sandeep Kumar (Convener) were present.

Dr. Ram Kailash Gupta (Chairman, Tecnia Group of Institutions) discussed his views on sustainability and growth of business. Dr. Ajay Kumar (Director, Tecnia Institute of Advanced Studies) told that The McKinsey 7S model is a useful framework for reviewing an organization's marketing capabilities from different viewpoints. He further added that the power of the McKinsey 7S model is that it covers the key organization capabilities needed to implement strategy successfully, whether you're reviewing a business, marketing or digital strategy. It also works well in different types of business of all sectors and sizes, although it works best in medium and large businesses. Dr. A.K Srivastava, (CEO, A&D, Tecnia Institute of Advanced Studies) said that scalability is at the heart of any inclusive business initiative's (IBI) success. But efforts to achieve it are fraught with unanticipated dangers. Even when equipped with a viable offering at the right price point, firms often fail to convince enough low income consumers of its value and thus never achieve the scale needed to make their inclusive venture profitable. Vote of thanks was given by Dr. Sandeep Kumar. He concluded the all sessions and gave thanks to support by management, faculty, research scholars, students and non- teaching staff.

-Bal Krishna Mishra

Workshop #absamjhautanahi in association with Vivel and Josh Talks

ICC Committee in association with Vivel and Josh Talks for the students of Tecnia Institute of Advanced Studies organized a Workshop on #absamjhautanahi in association with Vivel and of Tecnia Institute of Advanced Studies. The workshop was conducted by Josh talk group (in collaboration with Vivel). Josh Talks is a reputed group that has a Nobel aim of encouraging the young minds of India to bring about a change in the mindsets of the society. We had the opportunity of listing Ms. Devyani, a charismatic, learned & experienced speaker who with her knowledge and effort ignited a fire within the students by talking about various legal rights women have in our constitution through an interactive presentation and activities so that they can bring about a change in the mindsets of society. The purpose of this workshop was to make students informed and aware about their legal rights in constitution, Increase students' perceptiveness on gender-sensitive issues, and to motivate them to take gender -responsive actions at a personal level.

Felicitation of Ms. Devyani, Traniner

The workshop started with the felicitation ceremony where Dr. Surbhi Jain, Convener and Member Secretary ICC, TIAS felicitated Ms. Devyani, Trainer, Josh Talks.

Ms. Devyani, an enthusiastic Speaker & Campaign Trainer-the one for whom students eagerly awaited to hear. She is constantly working to inspire and grow the youth of India. She believes in the potential of the young. She is the believer of equality and has been working extensively for creating the society of aware citizens. She addressed the audience in a very short & sweet manner highlighting the definition of Gender and various gender related issues to be discussed in the upcoming sessions of the workshop. She acknowledged the students with the details of legal rights and framework for sexual harassment, POCSO, Domestic Violence, Divorce, Alimony and Inheritance. She also talked about various other issues like Cybersafety which includes cyberstalking, bullying and how the law deals with it. The event concluded with a happening and cheerful remark where speaker had an interactive session with the students. There was a Question & Answer Round where all the queries of the students were entertained. Questionnaire was also distributed among the students to know the kind of experiences students had in past. Students were quiet enthusiastic attending the workshop.

Y-B

Vol. 16 **No. 2**
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal,Bal krishna Mishra responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

My Story Mental Stigma & Empowerment

Lamp Lighting Ceremony during the workshop

Students Sharing Their Views During Workshop

IMPORTANT QUOTES

"The opposite of a correct statement is a false statement. The opposite of a profound truth may well be another profound truth."

Niels Bohr

•••

"In science one tries to tell people, in such a way as to be understood by everyone, something that no one ever knew before. But in poetry, it's the exact opposite."

Paul Dirac

•••

"Anyone who considers arithmetical methods of producing random digits is, of course, in a state of sin."

John von Neumann

•••

"It is unbecoming for young men to utter maxims."

Aristotle

•••

"Grove giveth and Gates taketh away."

Bob Metcalfe

•••

Compilation: Priya Kumari

WINNERS v/s LOOSERS Part-90

Winners use hard arguments but soft words; Losers use soft arguments but hard words.

•••

Winners stand firm on values but compromise on petty things; Losers stand firm on petty things but compromise on values.

•••

Winners follow the philosophy of empathy: "Don't do to others what you would, not want them to do to you"; Losers follow the philosophy, "Do it to others before they do it to you."

•••

Winners make it happen; Losers let it happen.

•••

The Winner is always part of the answer; The Loser is always part of the problem.

•••

The Winner always has a program; The Loser always has an excuse.

•••

To Be Continued In Next Issue-

Compilation: Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **youngstertias@gmail.com**